❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को 78वें स्वाधीनता दिवस एवं श्रावणी उपाकर्म-रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 47, अंक 39 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 अगस्त, 2024 से रविवार 18 अगस्त, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

## स्वतन्त्रता दिवस की 78वीं वर्षगांठ पर आर्यसमाज ने निकाली तिरंगा यात्रा

## झमाझम वर्षा की तेज फुहारें भी नहीं रोक पाई आर्यों का उत्साह

**राष्ट्रभक्ति, सेवा और निर्माण आर्य समाज समाज का मूल मंत्र - धर्मपाल आर्य, प्रधान**

**आजादी के लिए महर्षि की प्रेरणा से लाखों क्रांतिकारियों ने दिया बलिदान - विनय आर्य**

## बांग्लादेश के घटनाक्रम पर रोष व्यक्त एवं मृतकों की दी गई मौन श्रद्धांजलि

आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं में राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र सेवा को सदैव सर्वोपरि स्थान दिया जाता रहा है। इसलिये राष्ट्रीय पर्वों को भी आर्य समाज अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास के साथ मनाता रहा है। इस क्रम में स्वाधीनता दिवस की 78वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 11 अगस्त 2024 को वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली द्वारा विशाल तिरंगा यात्रा का भव्य आयोजन संपन्न हुआ।

तिरंगा यात्रा को ओ३म् ध्वज दिखाकर रवाना करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, डॉ. योगेश कुमार एवं श्री मुकेश गुप्ता। साथ में हैं कर्नल रमेश मदान, श्री विनय आर्य, श्री सतीश चड्डा, श्री राकेश आर्य एवं अन्य मंचस्थ महानुभाव।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य के सान्निध्य में, श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कुशल निर्देशन में दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों, आर्य संगठनों के अधिकारी व कार्यकर्ता और सदस्यों ने प्रमुखता से इस तिरंगा यात्रा में भाग लिया। वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के प्रधान कर्नल श्री रमेश मदान, आर्य केंद्रीय सभा

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

## आर्य समाज महर्षि पाणिनी नगर जोधपुर का रजत जयंती महोत्सव समारोह पूर्वक संपन्न

## 200 कुंडीय यज्ञ में हजारों आर्य नर-नारियों ने आहुति देकर की विश्व कल्याण की प्रार्थना

**महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती पर 200 नए लोगों से संपर्क का संकल्प लें आर्यजन - विनय आर्य, महामन्त्री**

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज महर्षि पाणिनी नगर जोधपुर, राजस्थान द्वारा तीन दिवसीय रजत जयंती महोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन यज्ञ, भजन, सत्संग और अन्य विशेष आयोजन संपन्न हुए। समापन के अवसर पर 200 कुंडीय यज्ञ में स्वामी ओमानंद सरस्वती,स्वामी सच्चिदानंद,

स्वामी चेतनानंद और आचार्य डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी के ब्रह्मत्व में आचार्य वरुण देव, डॉ. राम नारायण शास्त्री आदि महानुभावों ने यज्ञ में अहम भूमिका निभाई। हज़ारों की संख्या में आर्यजनों ने यज्ञ में आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की और पूरा वातावरण वेद मंत्रों की मधुर ध्वनियों से तथा यज्ञ की सुगंध से ओतप्रोत हो गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री, श्री विनय आर्य जी, आर्य

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

## बांग्लादेश में हिन्दुओं की हत्या, लूट, आगजनी, उत्पीड़न के विरुद्ध आर्य समाज ने बुलंद की आवाज

## दिल्ली के प्रत्येक हिस्से में आर्य समाज ने किया रोष प्रदर्शन

समाचार एवं चित्र पृष्ठ 4 पर

देववाणी-संस्कृत

## हम अबोध बालकों की सदा रक्षा करें

वेद-स्वाध्याय

**स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।**-ऋ० 1/1/9
**ऋषिः - मधुच्छन्दाः।। देवता - अग्निः ।। छन्दः - गायत्री।।**

**शब्दार्थ- अग्ने** = हे प्रभो! अग्ने! **सः** = वह तुम पिता **सूनवे इव** = पिता की भाँति मुझ पुत्र के लिए **सु उपायनः** = सुगमता से पहुँचने योग्य **भव** = होओ और **स्वस्तये** = कल्याण के लिए **नः** = हमें **सचस्व** = सेवित करो।

**विनय** - संसार में जिनके द्वारा हमारा जन्म होता है उन्हें हम पिता कहते हैं; और भी जो वृद्ध पुरुष, गुरु आदि होते हैं वे भी हमारा उत्कृष्ट पालन करनेवाले होने से पिता कहलाते हैं, परन्तु हे अग्ने! हम सभी को कभी-न-कभी अनुभव हो जाता है कि हमारे असली पालक पिता तो एकमात्र तुम्हीं हो। एक समय आता है जब सांसारिक पिता भी वैसे ही रोते खड़े रह जाते हैं और हमारी पालना, रक्षा नहीं कर सकते सचमुच संसार के वासी हम सब सांसारिक पिता व पुत्र सब के सब तेरे एक समान पुत्र हैं। हे हम सबके पितः! हे परमपितः! जब हम सब तेरे पुत्र हैं तब हमारी आप तक सदा पहुँच क्यों नहीं होती? पुत्र का तो यह अधिकार है कि वह जब चाहे पिता के पास पहुँच सके। जब इस संसार में और कोई हमारी रक्षा कर सकनेवाला है ही नहीं, हमारा दुखड़ा सुन सकनेवाला है ही नहीं, तो हे पितः! हम और कहाँ जाएँ? तू तो हमारे लिए 'सु उपायन' रह, सुगमता से पहुँच सकने वाला हो। हे एकमात्र पितः! हम जिस समय चाहें, जिस स्थान पर चाहें तुझे मिल सकें- अपना दुःख सुना सकें- अपनी बाल कामनाएँ पूरी करा सकें। हम बच्चों की तुमसे यही प्रार्थना है, यह याचना है।

हमारा कल्याण किसमें है, यह भी हम अबोध बालक क्या जानें! जो हमें अकल्याण दिखाई देता है पीछे पता लगता है कि वही कल्याण था। हे पितः! तुम्हीं जानते हो कि हम बच्चों का कल्याण किसमें है। बस, तुम्हीं हमारी स्वस्ति के लिए, कल्याण के लिए हमें-अपने बच्चों को सेवित करो, पालो-पोसो। हम तुम्हारे बच्चे हैं! हम तुम्हार बच्चे हैं!

**-: साभार :-**
**वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

# क्या अब बांग्लादेश के हिन्दू भी इतिहास बन जाएंगे?

पड़ोसी देश बांग्लादेश में तख्तापलट के बाद अब नई अंतरिम सरकार का गठन हो चुका है। इस सरकार की अगुवाई नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस कर रहे हैं। परन्तु सवाल पहली या अंतरिम सरकार के गठन का नहीं है, सवाल है 5 अगस्त की शाम जिसे भुलाया नहीं जा सकता। उस दिन बांग्लादेश में गैर-मुस्लिमों के कत्लेआम की कहानी लिखी जा रही थी। हसीना भारत आ गई , लेकिन देर शाम चट्टोग्राम में एक मंदिर पर हमला बोल दिया गया। मुस्लिम कट्टरपंथियों ने प्रदर्शन की आड़ में हिंदू घरों और मंदिरों पर हमला करना शुरू कर दिया। 24 जिलों में हिंदू नेताओं के घरों पर हमला हुआ। लूटपाट, आगजनी, हिंसा, रेप करने को मानों कट्टरपंथी मुल्लाओं को खुला मैदान मिल गया हो। हिन्दू घरों, उनके व्यवसायों पर उन्मादी भीड़ टूट पड़ी। कट्टरपंथ क्या कर सकता है, किस हद तक जा सकता है, इसका जीता-जागता उदाहरण बांग्लादेश के लोगों की आँखों में देखा जा सकता है। जो खबरें आ रही हैं, वे बहुत डरावनी हैं। भयावह भी।

यह सच है कि फिलहाल वहाँ रह रहे हिंदुओं और सिखों को जान-माल का ख़तरा है। उनके घर जलाए जा रहे हैं। उनके मंदिर और गुरुद्वारे अपवित्र किए जा रहे हैं। कहीं-कहीं आग के हवाले भी। बहुत लोगों का मानना था कि हसीना सत्ता में थी तो सब कुछ ठीक था। हसीना की सरकार में हिंदू सुरक्षित थे। हसीना सत्ता में थी तब भी मजहबी उन्माद की आंच की लपटें कहीं न कहीं देखने में आती रही थी। बस इतना था कि उनके मंदिर और गुरुद्वारे सुरक्षित थे। उनके परिवार और परिवार की महिलाएँ, बच्चियाँ सुरक्षित थीं। उनकी दुकानें और व्यापार सुरक्षित था, लेकिन मंदिर में ज़ोर से घंटी बजाने की इजाज़त नहीं थी। गुरुद्वारे में तेज आवाज़ में अरदास की इजाज़त नहीं थी। महिलाएँ और बच्चियाँ सुरक्षित तो थी, लेकिन उन्हें खुलापन नहीं दिया गया था।

शेख हसीना के लंबे शासनकाल में हजारों मस्जिदें बनाई गईं लेकिन कोई एक मंदिर तक नहीं बनाया गया। बहुत से लोग शेख हसीना का राज जाने के बाद उनके प्रति दया का भाव रख सकते हैं लेकिन उन्होंने अपने लंबे शासनकाल के दौरान न तो किसी के प्रति दया भाव दिखाया, न ही किसी के प्रति को उदारता बरती। उन्होंने कई मदरसे बनवाए, कई इस्लामिक यूनिवर्सिटी बनवाईं। उन्होंने कई मस्जिदें भी बनवाईं, लेकिन कभी कोई हिंदू मंदिर नहीं बनवाया। फिलहाल, शेख़ हसीना भारत की राजधानी दिल्ली में किसी सेफ़ हाउस में बैठी हुई हैं। उन्हें शरण देने के लिए अब तक कोई देश आगे नहीं आया है। बांग्लादेश को आज़ादी दिलाने वाले, वहाँ के राष्ट्रपिता कहलाने वाले मुजीबुर्रहमान की बेटी के एक दिन ये हाल होंगे, ये किसी ने सोचा नहीं था। खुद शेख़ हसीना ने भी नहीं। लेकिन ऐसे में सवाल है बांग्लादेश का क्या होगा? उससे भी ज़रूरी है वहाँ रह रहे अल्पसंख्यक समुदाय, जिसमें हिन्दू, जैन, बौद्ध समेत कई मत शामिल हैं, उनका क्या होगा?

इन सवालों के जवाब अंतरिम सरकार के गठन से ही मिल जाएंगे। दरअसल, बांग्लादेश की नई सरकार में 16 अन्य सदस्य भी शामिल हैं, जिन्हें अलग-अलग जिम्मेदारी सौंपी गई है। जिन 16 अन्य लोगों को सरकार का हिस्सा बनाया गया है, उनमें फिलहाल सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है अबुल फैयाज मोहम्मद खालिद हुसैन की। मोहम्मद यूनुस की अगुवाई वाली अंतरिम सरकार में खालिद हुसैन को धार्मिक मामलों का मंत्री बनाया गया है, जबकि खालिद हुसैन को बांग्लादेश में एक प्रमुख कट्टरपंथी के तौर पर देखा जाता है। वह एक इस्लामी कट्टरपंथी देवबंदी मौलाना है। बताया जाता है कि खालिद हुसैन हिफाजत-ए-इस्लाम बांग्लादेश नाम से एक संगठन से जुड़ा हुआ है। इस संगठन का इतिहास रहा है कि यह हिंदू और खास तौर पर भारत विरोधी रवैया अपनाता रहा है। कहा तो यह भी जाता है कि हिफाजत-ए-इस्लाम बांग्लादेश को अफगानिस्तान की तरह बनाना चाहता है। इस संगठन का इतिहास हिंदू विरोधी हिंसा में लिप्त रहने का है। खालिद हुसैन इस संगठन का उपाध्यक्ष रहा है। वह कुछ वर्ष पहले तक इस संगठन का उप-मुखिया के तौर पर भी काम कर चुका है। यह संगठन लगातार बांग्लादेश में कट्टरपंथी इस्लाम लाने की वकालत करता रहा है। ऐसे में किसी कट्टरपंथी को ही धार्मिक मामलों का मंत्री बनाना कितना सही है, ये एक बड़ा सवाल है।

यूनुस सरकार की नियत साफ झलक भी रही है। यूनुस ने जब खालिद हुसैन को यह जिम्मेदारी दी है, उसकी टाइमिंग भी काफी कुछ कहती है। दरअसल, कुछ दिन पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरिम सरकार के गठन के बाद मोहम्मद यूनुस को सोशल मीडिया एक्स पर बधाई देते हुए, बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा और संरक्षण की अपील की थी। लेकिन इस अपील के बाद भी यूनुस सरकार ने खालिद हुसैन जैसे कट्टरपंथी को इतनी बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी। ये साफ बताता है कि यूनुस सरकार का झुकाव ऐसे लोगों के प्रति ज्यादा है जिनका इतिहास अल्पसंख्यकों पर अत्याचार को बढ़ावा देने का रहा है।

**......शेख हसीना के लंबे शासनकाल में हजारों मस्जिदें बनाई गईं लेकिन कोई एक मंदिर तक नहीं बनाया गया। बहुत से लोग शेख हसीना का राज जाने के बाद उनके प्रति दया का भाव रख सकते हैं लेकिन उन्होंने अपने लंबे शासनकाल के दौरान न तो किसी के प्रति दया भाव दिखाया, न ही किसी के प्रति को उदारता बरती। उन्होंने कई मदरसे बनवाए, कई इस्लामिक यूनिवर्सिटी बनवाईं। उन्होंने कई मस्जिदें भी बनवाईं, लेकिन कभी कोई हिंदू मंदिर नहीं बनवाया।....फिलहाल, शेख़ हसीना भारत की राजधानी दिल्ली में किसी सेफ़ हाउस में बैठी हुई हैं। उन्हें शरण देने के लिए अब तक कोई देश आगे नहीं आया है। बांग्लादेश को आज़ादी दिलाने वाले, वहाँ के राष्ट्रपिता कहलाने वाले मुजीबुर्रहमान की बेटी के एक दिन ये हाल होंगे, ये किसी ने सोचा नहीं था। खुद शेख़ हसीना ने भी नहीं। लेकिन ऐसे में सवाल है बांग्लादेश का क्या होगा? उससे भी ज़रूरी है वहाँ रह रहे अल्पसंख्यक समुदाय, जिसमें हिन्दू, जैन, बौद्ध समेत कई मत शामिल हैं, उनका क्या होगा?....**

दूसरा बांग्लादेश में पाकिस्तान समर्थक जमात का राजनीतिक पटल पर उभरकर आना भी न भारत के लिए शुभ है और न ही बांग्लादेश के हिंदुओं अल्पसंख्यकों के लिए। पिछले एक दशक से बांग्लादेश में जमात-ए-इस्लामी मोटे तौर पर ख़ामोश रही थी, क्योंकि मौजूदा प्रधानमंत्री शेख़ हसीना की अगुवाई वाली सत्ताधारी अवामी लीग ने उसके ऊपर प्रतिबंध लगा दिया था। फिर भी, हाल ही में जमात एक बार फिर बांग्लादेश के राजनीतिक मोर्चे पर नज़र आई, जब उसने थोड़े समय पहले ढाका में एक विशाल रैली आयोजित की। जमात-ए-इस्लामी की गतिविधियों पर सख़्त पाबंदियों के बाद अगर उसने ढाका में अपनी ताकत खुलकर दिखा , तो इसके कई कारण रहे हैं। उसे पाकिस्तान से फंडिंग मिलने के संकेत हैं।

दरअसल, 1971 में बांग्लादेश की आजादी की लड़ाई के दौरान, जमात-ए-इस्लामी ने बांग्लादेश के हितों को नुकसान पहुंचाते हुए, पाकिस्तानी फ़ौज के साथ साठ-गांठ कर ली थी। जब बांग्लादेश ने आज़ादी हासिल कर ली, तब जमात वहां की राजनीतिक व्यवस्था का हिस्सा बन गई और उसने इस्लामिक हुकूमत स्थापित करने के लिए चुनाव भी लड़ना शुरू कर दिया। हालांकि, शुरुआत में जमात को कामयाबी नहीं मिली। मगर, जमात-ए-इस्लामी ने देश की दोनों बड़ी पार्टियों, मौजूदा सत्ताधारी अवामी लीग और बांग्लादेश के मुख्य विपक्षी दल बांग्लादेशी नेशनलिस्ट पार्टी के साथ मिलकर काम किया। शेख हसीना की आवामी लीग जमात को गद्दार और रजाकार कहती रही है और जमात-ए-इस्लामी का पाकिस्तानी प्रेम भी समय-समय पर दीखता रहा है। साल 2008 के चुनाव में अवामी लीग ने अपना चुनाव अभियान, जमात-ए-इस्लामी के सारे नेताओं के खिलाफ युद्ध का मुकदमा चलाने के मुद्दे पर चलाया था। इन सभी नेताओं पर 1971 के बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम में पाकिस्तानी फौज से गठजोड़ करने के इल्जाम थे।

- शेष पृष्ठ 7 पर

गतांक से आगे -

**हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति दिवस पर विशेष**

# हैदराबाद सत्याग्रह आंदोलन का भावपूर्ण इतिहास

# आर्य समाज के महान वीर बलिदानियों को शत शत नमन

दिल्ली के शांति प्रकाश जी की भी हैदराबाद जेल में 27-07-1939 को मृत्यु हो गई। नागपुर के पुरुषोत्तम प्रभाकर की 16-12-1938 को हैदराबाद जेल में, उत्तर प्रदेश के माखन सिंह की 01-07-1939 को हैदराबाद जेल में, रावलपिंडी के पंडित परमानंद जी की 05-04-1939 को हैदराबाद जेल में, उत्तर प्रदेश के स्वामी कल्याणानंद जी की 08-07-1939 को गुलबर्गा जेल में, बैंगलोर के स्वामी सत्यानंद जी को चंचलगुडा जेल में, विष्णु भगवंत अंदुरकर की 02-05-1939 को चंचलगुडा जेल में, व्यंकटराव कंधारकर की 09-04-1939 को निजामाबाद जेल में मृत्यु हुई । उमरी, जिला नांदेड में गणपतराव, गंगाराम और दत्तात्रेय इन तीन आर्य समाजी प्रचारकों को पठानों ने पत्थरों से पीट-पीट कर मार डाला ।

1942 में उद्गीर में बै. विनायकराव जी विद्यालंकार की अध्यक्षता में एक परिषद् हुई। इस परिषद् में निजामी पुलिस, रज़ाकारों और अमानवीय अत्याचार करने वाले सभी घटकों को चेतावनी दी गई। तब पुलिस और मुस्लिम संगठनों की ओर से हिंदुओं के घरों और दुकानों पर ज़ोरदार हमले किये गए। हुमनाबाद में एक जुलुस पर पुलिस ने गोलियाँ चलाई जिससे 5 लोग मारे गए।

1943 में निज़ामाबाद में फिर एक बार आर्य समाज की परिषद हुई। आर्यसमाज के लिए काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की देश, धर्म और ध्येय पर निष्ठा और व्यवहार पूरी तरह से अनुशासनपूर्ण था। इस परिषद् में पच्चीस हज़ार सैनिकों का एक दल स्थापित करने का निर्णय हुआ। साथ ही, यह भी निर्णय हुआ कि कई स्थानों पर पाठशालाएँ खोलकर देश से प्रेम करने वाले, निष्ठावान, ऊर्जावान और अनुशासनपूर्ण युवाओं का निर्माण किया जाये। निज़ाम सरकार ने आर्य समाज की दीक्षा ले चुके सरकारी अधिकारी और कर्मचारियों को निकाल देने का फरमान जारी किया। इतना ही नहीं, यहां तक कि अगर कोई सरकारी कर्मचारी किसी आर्य समाजी से बात करता हुआ दिख जाए, तब भी उसे नौकरी से निकाल देने के आदेश जारी कर दिए गए थे। कुल मिलाकर निजाम सरकार का आर्य समाज के लोगों के बारे में अत्यंत सख्त रवैया हो चुका था।

एक तरफ निजाम का अत्याचार लगातार बढता ही जा रहा था तो दूसरी तरफ आर्य समाज का आंदोलन भी जोर पकडता जा रहा था। केशवराव कोरटकर, अघोरनाथ चट्टोपाध्याय, श्रीपादराव सातवलेकर आदि के नेतृत्व में उस्मानाबाद जिले में कई स्थानों पर आर्य समाज का संगठन खड़ा होने लगा। कई स्थानों पर आर्य समाज मंदिर खोले गए। बापूराव मास्टर, रामभाऊ मैंदरकर, तुलजाराम सुरवसे ने मिलकर उस्मानाबाद जिले में आर्य समाज के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक कामों में अच्छी तेजी लायी। इनके साथ सन्मित्र समाज के दत्तोपंत जिंतूरकर, बलभीमराव हिंगे, ज्ञानराव सालुंके, डांगे, देवीदास मुरूमकर, पुरुषोत्तमराव माशालकर आदि कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता संग्राम की तैयारी की दृष्टि से एक व्यायामशाला

......गांधी जी के कहने पर "कालेज छोड़ो आंदोलन" को उग्र रूप प्राप्त हुआ और विद्यार्थी तेज़ी से कालेज छोड़कर जाने लगे। उस्मानाबाद जिले की सीमा पर लगे हर शिविर में दयानंद कालेज के विद्यार्थी हर काम में आगे थे। "पहले स्वराज फिर शिक्षा" के अपने ध्येय को हैदराबाद राज्य में फैलाने और हैदराबाद शहर तक पहुंचाने के लिए, दयानंद कालेज के विद्यार्थी पहुंचे। कालेज के तत्कालीन प्राचार्य श्रीराम शर्मा जी, जो एक विख्यात इतिहासकार थे, ने विद्यार्थियों को देशप्रेम और धर्मप्रेम की शिक्षा तो दी ही, साथ ही अन्याय के विरुद्ध लड़ने की शक्ति भी दी। विद्यार्थियों को निर्भय बनाया। दयानंद कालेज क्रांति के लिए शस्त्र और प्रेरणा प्रदान वाला एक असीमित भंडार बन गया था।......

प्रारंभ कर बल की उपासना की शुरु की। महाराष्ट्र समाज के कार्यकर्ता द. या. गणेश, न.प. मालखरे, शंकर नायगांवकर, चंदूलाल गांधी, सुपेकर, जिंतुरकर, आदियों ने गांव-गांव जाकर जनजागृति का कार्य किया और स्वयं सत्याग्रह में भाग लिया। उन्हें सजा भी हुई। इसी दौरान सोलापुर में दयानंद कालेज की स्थापना हुई। मराठवाड़ा के लोगों के लिए सोलापुर, हैदराबाद की तुलना में शिक्षा और आर्थिक दृष्टि से ज्यादा सुलभ था। इसलिए दयानंद कालेज में छात्रों की संख्या तेज़ी से बढ़ने लगी। अंग्रेजों और निजामशाही के खिलाफ शुरू किए गए स्वतंत्रता संग्राम के लिए युवकों को प्रेरणा देने का कार्य इसी कालेज ने किया। यह बात एक खुल्ला सत्य है। कालेज के विद्यार्थी आर्य समाज के विचारों से प्रभावित होकर निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह और वंदे मातरम सत्याग्रह में पूरे जोर-शोर से भाग लेने लगे। दयानंद कालेज में मराठवाड़ा से आए हुए विद्यार्थियों ने हैदराबाद स्टूडेंट यूनियन की स्थापना की। इस यूनियन के तत्वावधान में कॉलेज प्रांगण में विनायकराव जी विद्यालंकार, पंडित नरेंद्र जी, भाई बंसीलाल जी जैसे आर्य समाज के नेताओं के भाषण होने लगे। गांधी जी के कहने पर "कालेज छोड़ो आंदोलन" को उग्र रूप प्राप्त हुआ और विद्यार्थी तेज़ी से कालेज छोड़कर जाने लगे। उस्मानाबाद जिले की सीमा पर लगे हर शिविर में दयानंद कालेज के विद्यार्थी हर काम में आगे थे। "पहले स्वराज फिर शिक्षा" के अपने ध्येय को हैदराबाद राज्य में फैलाने और हैदराबाद शहर तक पहुंचाने के लिए, दयानंद कालेज के विद्यार्थी पहुंचे। कालेज के तत्कालीन प्राचार्य श्रीराम शर्मा जी, जो एक विख्यात इतिहासकार थे, ने विद्यार्थियों को देशप्रेम और धर्मप्रेम की शिक्षा तो दी ही, साथ ही अन्याय के विरुद्ध लड़ने की शक्ति भी दी। विद्यार्थियों को निर्भय बनाया। दयानंद कालेज क्रांति के लिए शस्त्र और प्रेरणा प्रदान वाला एक असीमित भंडार बन गया था।

हर छोटे-बड़े गांव में आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी और उसका काम बढ़ रहा था। इसके कारण दीनदार सिद्दिक संगठन का प्रभाव कम होने लगा। मुरूम (तालुका उमरगा) में आर्य समाज की स्थापना हुई, तब निजाम ने वहां 200 फौजी जवानों की एक टुकड़ी भेजी तैनात की। फ़ौज की मदद से दीनदार सिद्दीक पार्टी और खाकसार पार्टी अपना कार्य करने लगी। आष्टा (कासार) में सिद्दीकी के भाषण से लोग भड़क उठे, क्योंकि भाषण के पहले सिद्दीक पार्टी के लोग मस्जिद में एक गाय लेकर आये थे। श्याम लाल जी को यह समाचार मिलते ही वे आष्टा (कासार) में पहुंचे। उन्होंने आष्टा (कासार), मुरूम आदि गांव में भाषण देकर हिंदुओं को आर्य समाज की दीक्षा दी और उन्हें यज्ञोपवीत पहनाया। आर्य समाज का आंदोलन हैदराबाद स्टेट की सीमा तक पहुंचा हुआ देखकर निजाम ने फौज का खर्चा भी हिंदुओं पर लाद दिया। इससे असंतोष और भी बढ़ने लगा। सर अकबर हैदरी उस समय निजाम के प्रधान थे। अनंतराव काका (आष्टा कासार), राम पांढरे, और करबसप्पा ब्याले, यह सभी लोग हैदराबाद जाकर हैदरी साहब से मिले। सभी ने मिलकर हैदरी साहब को अनुरोध किया कि यह सारा खर्च हिंदु प्रजा पर लादना अन्यायपूर्ण है और उसे हटा दिया जाए। तब हैदरी साहब ने यह खर्च हिंदुओं और मुसलमानों पर एक समान कर दिया। लेकिन प्रजा के द्वारा फ़ौज का खर्च उठाना अन्यायपूर्ण ही था और यह चलता रहा। सोलापुर से प्रकाशित होने वाले "वैदिक संदेश" और"सुदर्शन", इन दो आर्य समाजी मुखपत्रों के माध्यम से, संग्राम की सारी जानकारी, आगामी कार्यक्रम और सूचनाएं लोगों तक पहुंचने लगे। "वैदिक संदेश" ने तो "निजाम सरकार के काले कानून" नामक पुस्तक भी प्रकाशित की। हैदराबाद स्टेट में उस्मानाबाद जिले के कुल 13 लोगों पर भाषण और लेख लिखने पर प्रतिबंध लगाया गया था। इन 13 लोगों के नाम पूरे राज्य में जारी किए गए थे। इस सूची में राम पांढरे (मुरुम) का भी नाम था। इन 13 व्यक्तियों को "नागवार बागी" करार दे कर निज़ाम सरकार ने नोटिस भेजी थी।

हुतात्मा रामा मांग तावशी, ता. लोहारा (पायगा) में रामा मांग नामक व्यक्ति ने आर्य समाज की दीक्षा ली थी। 1932 में तावशी में एक हिंदू मंदिर को तोड़कर मस्जिद बनाने की कोशिश की जा रही थी। तब क्रोधित आर्य समाजी लोगों ने मस्जिद के चबूतरे को तोड़ दिया। फिर तावशी के रज़ाकार, आसपास के गांव में जाकर दो ट्रक भरकर सशस्त्र पठान और अरबी लोगों को बुलाकर लाये। ये सभी "अब देखते हैं , किसमें हिम्मत है हमें रोकने की ?" और "अल्ला हू अकबर" चिल्लाते हुए मंदिर को तोड़ने के लिए निकले। इतने सारे सशस्त्र पठानों और अरबों को देखकर सभी हिंदू चुपचाप खड़े रहे। लेकिन तभी जोर से आवाज आयी "मैं तैयार हूं..... तुम लोगों से मुकाबला करने के लिए!! मंदिर की एक ईंट को भी किसी ने हाथ लगाया, तो एक-एक के सर काट दूंगा!!" यह आवाज़ थी, रामा मांग की!! वह अकेला ही था, लेकिन बहुत बलशाली था। रामा को आगे आते हुए देखकर एक पठान ने उस पर गोली चलाई। गोली उसकी जांघ में घुस गई। उसी अवस्था में रामा मांग अरबों और पठानों की भीड़ पर टूट पड़ा। पहले ही झटके में उसने चार पठान और एक अरब को नरक पहुँचा दिया। एक पठान के हाथ से बंदूक छीनकर उसने चार और पठानों और एक अरब के सर फोड़ दिए। एक पठान के हाथ का तमंचा उसने छीन लिया। रामा मांग का वो आवेश देखकर, पठानों और अरबों ने वहाँ से भाग जाने में ही अपनी भलाई समझी। लोग रामा मांग को तुलजापुर ले गए और फिर वहां से उसे उस्मानाबाद ले जाया गया । जांघ में लगी गोली के कारण अत्यधिक रक्त बह गया था और वह बेहोश हो गया था। अंतत: उस्मानाबाद के अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गई। आर्य समाज की एक शाखा के अध्यक्ष माणिक राव पर गुंडों ने हमला कर उन्हें जख्मी कर दिया। 27 अक्टूबर 1938 को अस्पताल में उनका निधन हो गया। पुलिस ने उनके शव को उनके घरवालों को देने से इंकार कर दिया। तब आर्य समाजी युवकों ने इसके विरोध में जुलूस निकाला। पुलिस ने पं. देवीलाल और अन्य 20 आर्य समाजी कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिय। इस प्रकार निजाम ने हर तरह से आर्य समाजी कार्यकर्ताओं पर अत्याचार किए। आर्य समाज पर निजाम को अत्यंत क्रोध था। हिंदुओं का संगठन करने वाले आर्य समाज के आंदोलन को कुचलने के लिए उसने हर संभव मार्ग अपनाया। लेकिन उसकी प्रतिक्रिया आर्य समाज की शाखाएं दुगनी होने में नजर आने लगी।

आर्य समाज ने न केवल हिंदुओं का संगठन किया, बल्कि जन्मजात मुसलमानों को भी वैदिक पद्धति से दीक्षा देकर उनका शुद्धिकरण का कार्य अत्यंत द्रुतगति से जारी रखा। अनेक अस्पृश्यों को आर्य समाज में स्थान देकर उनके मन में हिंदुधर्म और हिंदुराष्ट्र के प्रति प्रेम और स्वाभिमान पैदा किया। आर्य समाज द्वारा हैदराबाद स्टेट में किया गया यह कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुमूल्य है। आर्य समाज संगठन के कारण ही हैदराबाद स्टेट कांग्रेस मजबूती से खड़ी हो सकी।- **संपादक**

# बांग्लादेश में हिन्दुओं की हत्या, लूट, आगजनी, उत्पीड़न के विरुद्ध आर्य समाज ने बुलंद की आवाज

# दिल्ली के प्रत्येक हिस्से में आर्य समाज ने किया रोष प्रदर्शन : मृतकों को दी श्रद्धांजलि

**बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु ठोस कदम उठाए भारत सरकार – सुरेशचन्द आर्य, प्रधान सार्वदेशिक सभा**

**आर्यसमाज ने भारत सरकार से की बांग्लादेश में अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बनाने की बनाने की मांग**

## बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर अत्यचार से मानवता शर्मसार : भारत की तरह हर देश में सुरक्षित हों – अल्पसंख्यक

आर्य समाज सदा से हिंदुओं का सजग प्रहरी रहा है। देश हो या विदेश जब-जब हिंदुओं के सामने को आपदा अथवा उनके अस्तित्व पर कोई प्रहार होता है, तब-तब आर्य समाज आगे बढ़कर अपनी आवाज बुलंद करता आया है। पड़ोसी बांग्लादेश में उत्पन्न हुई विषम परिस्थितियों से सम्पूर्ण विश्व समुदाय परिचित है। वहाँ छात्रों के आंदोलन की आड़ में मुस्लिम कट्टरपंथियों द्वारा जिस तरह से मौत का तांडव मचाया जा रहा है, वह असहनीय है और किसी भी तरह से अक्षम्य में है। वहाँ की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के बांग्लादेश देश छोड़ते ही दिल दहलाने वाली, मानवता को शर्मसार करने वाली, लूट पाट, नृशंस हत्याएँ और बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों

– शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – हनुमान रोड

बिड़ला लाइन्स कमला नगर, दिल्ली

दिलशाद गार्डन, दिल्ली

सूरजमल विहार, दिल्ली

प्रीत विहार, दिल्ली

सुन्दर विहार, दिल्ली

राधापुरी, दिल्ली

कालका जी, नई दिल्ली

दयानन्द विहार, दिल्ली

ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली

लक्ष्मी नगर, दिल्ली

यमुना विहार, दिल्ली

बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली

गंगोह, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

इन्दिरापुरम, गाजियाबाद (उ. प्रदेश)

रामनगर, लातूर (महाराष्ट्र)

## अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन न्यूयार्क के अवसर पर द. अमेरिकी राज्यों त्रिनिदाद-टोबैगो की आर्य संस्थाओं का निरीक्षण

# एक गौरवशाली प्रेरक अनुभूति : मेरी त्रिनिदाद यात्रा

भारत के बाहर भारत का होना बहुत अच्छा लगता है, उससे भी अच्छा लगता है भारत से हजारों किलोमीटर दूर किसी देश में अपने धर्म और संस्कृति को मुस्कुराते देखना। इन दिनों महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अमेरिका में आयोजित किया गया। भारत के सैकड़ों आर्यजन, विद्वान्, संन्यासी इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने पहुंचे। चार दिवसीय सम्मेलन का भव्य आरम्भ और समापन हुआ।

कहते हैं चलना, देखना और सुनना जीवन का अनुभव आगे बढ़ा देता है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अमेरिका के समापन के बाद मेरा जाना हुआ त्रिनिदाद। यह कैरिबियन सागर का एक द्वीप है, जो कैरिबियन सागर के दक्षिणी छोर पर स्थित है। त्रिनिदाद और टोबैगो मिलकर एक द्वीप देश बना है। इस देश के बारे में एक खास बात यह है कि यहाँ कोई धार्मिक या जातीय समुदाय बहुसंख्यक नहीं है। त्रिनिदाद की कुल आबादी में करीब चालीस प्रतिशत लोग भारतीय हैं। अड़तीस या उन्तालीस प्रतिशत अफ्रीकी, अन्य में यूरोपीय, चीनी, अमेरिकी आदि निवास करते हैं। अगर थोड़ा सा आर्थिक संभावनाओं के संदर्भ में त्रिनिदाद और टोबैगो की बात की जाए तो यह सबसे संपन्न कैरिबियाई देश है क्योंकि इसके पास तेल और गैस का विशाल भंडार है। लेकिन यहाँ जाने का मेरा प्रयोजन इस देश की आर्थिक सम्पन्नता या विपन्नता जानने का नहीं था। मेरा प्रयोजन इतना था कि महर्षि दयानंद जी के अमर आर्य शिष्यों ने वहाँ एक सदी पहले जो वैदिक संस्कृति की फसल के बीज रोपे थे, उनके दर्शन करने का था। वो बीज जो वर्तमान में वट वृक्ष बन चुके हैं।

भारत भले ही मेरे लिए वो देश, वो जगह है जहाँ मेरा जन्म हुआ, मेरे से पहले की हजारों अनगिनत पीढ़ियों का भी जन्म स्थल है, जहाँ मुझे शिक्षा, संस्कार और पहचान मिली। लेकिन यहाँ पहुँचकर मुझे बिलकुल महसूस नहीं हुआ कि मैं भारत से बाहर हूँ। त्रिनिदाद पहुंचा, तो मन में गर्व के भाव भर आए कि कैसे बिना साधनों के 100 वर्ष पहले आर्य समाज के कार्यकर्ता वहां पहुंचे। जब मैं वहां पहुंचा, तो त्रिनिदाद के आर्य बंधुओं ने बताया कि 52 वर्ष बाद भारत से कोई आर्य समाज से जुड़ा अधिकारी यहाँ पहुंचा है। त्रिनिदाद में पंडित हंसराज जी से मिलना हुआ, उनकी पुत्री आर्य समाज के मजबूत कार्यकर्ता सदस्य के रूप में निरंतर आर्य समाज की सेवा में लगी हैं। वैदिक मिशन त्रिनिदाद की प्रधान रत्ना कंगल जी, मंत्री चन्द्रभान रामदीन जी, नलिनी रामदीन जी, पंडित जीवन जी, पंडित चन्द्र बहादुर जी, पंडित सुरेन्द्र भान, एवं पंडित राधे जी समेत अनेकों आर्य कार्यकर्ताओं से मिलना हुआ। आर्य समाज के कार्यों को लेकर व्यापक चर्चा हुई, भविष्य के कार्यों की रूपरेखा पर बात हुई।

हालाँकि, समय का अभाव कुछ ऐसा रहा कि जिस कारण आर्य प्रतिनिधि सभा त्रिनिदाद के अधिकारियों से भेंट नहीं हो सकी। लेकिन आर्य प्रतिनिधि सभा त्रिनिदाद द्वारा चलाए जा रहे सेवा कार्यों और भवनों को देखना बड़ा सुखदायक रहा। गांधी मेमोरियल वैदिक स्कूल देखने का सौभाग्य मिला। अवोकेट वैदिक स्कूल और अवोकेट आर्य समाज मंदिर के दर्शन किए। त्रिनिदाद द्वीप पर वैदिक संस्कृति के संस्थानों के रूप में खिले ये फूल मन में बस गए। मेरा रात्रि विश्राम पंडित हंसराज जी के यहाँ था। उन्होंने वैदिक मिशन त्रिनिदाद द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया और साथ ही यह भी कि कैसे स्वामी दयानंद सरस्वती जी के सिपाहियों ने यहाँ आकर उनके धर्म और संस्कृति की रक्षा की थी।

दरअसल, जो नहीं जानते, उनके लिए बता दूँ कि त्रिनिदाद का इतिहास ही ऐसा है। 30 मई 1845 को भारतीय मज़दूरों का एक जत्था लेकर अंग्रेज त्रिनिदाद के पोर्ट ऑफ स्पेन हार्बर पहुंचे थे। इस जत्थे में 225 भारतीय शामिल थे। 103 दिन की समुद्री यात्रा के दौरान उन्होंने 36 हजार किमी का सफर तय किया था। कैरिबियाई धरती पर पहुंचकर भारतीय मजदूरों को कैसे प्रताड़ना, बीमारियां, रंगभेद और नशे जैसी कितनी ही समस्याओं से जूझना पड़ा। भारतीय मजदूरों को जिन खास काम के लिए कैरिबियाई मुल्कों में लाया गया था, उनमें से प्रमुख था गन्ने की खेती। गुलाम भारत के आंकड़े बताते हैं कि 1845 से 1917 के बीच करीब 1.5 लाख भारतीयों को कैरिबिया द्वीप समूह भेजा गया था।

हुआ ये कि त्रिनिदाद में भारत से आए हुए बहुत से लोग ईसाई बनने लगे। पादरी तैयार थे। अंग्रेज भारत से हिन्दुओं को त्रिनिदाद ले जाते और वहां पादरी उनका धर्मांतरण करा देते। हिन्दू धर्म के बड़े-बड़े मठाधीश अनभिज्ञ थे, या कहो सोए हुए थे। किन्तु आर्य समाज के सिपाही स्वयं जागकर देश और धर्म को भी जगाने का कार्य कर रहे थे। जब त्रिनिदाद में पादरियों की इस कुटिल चाल का पता तत्कालीन आर्य नेताओं को चला तो साल 1910 में महर्षि जी के अनन्य शिष्य भाई परमानंद त्रिनिदाद पहुंचने वाले पहले आर्य समाजी थे। उन्होंने वहां पहुंचकर वैदिक धर्म की पताका फहराने का कार्य किया। अपने भाषणों, दैनिक प्रवचनों से वैदिक धर्म की महत्ता पर प्रकाश डाला। शुद्धि का एक ऐसा आन्दोलन चलाया कि ईसाई बने भारतीय हिन्दू वापस अपने मूल धर्म में लौटने लगे।

भाई परमानन्द के साथ-साथ कई अन्य आर्य समाज के विद्वान पहुँचने लगे। साल 1929 में पंडित मेहता जैमिनी आए, उनके प्रयासों से माराबेला में एक भवन निर्मित कराया गया और हिंदी कक्षाएं आयोजित की जाने लगी। आर्य समाज

के सिपाही धुन के पक्के थे। साल 1934 में पंडित अयोध्या प्रसाद पहुंचे, और स्थानीय आर्य समाज समुदाय उनसे इतना प्रभावित हुआ कि उन्हें तीन साल के लिए अपने प्रवास को बढ़ाने के लिए निवेदन किया। अयोध्या प्रसाद ने अपने लोगों की शुद्धि तो की ही, साथ ही अन्य धर्मों के लोगों की शुद्धि की और उन्हें वैदिक धर्म में लाए। जिन लोगों को अपने निर्णय या अपने माता-पिता के निर्णय पर पछतावा हुआ, उन्हें हिंदू धर्म में वापस लौटने का अवसर मिल गया था। पंडित अयोध्या प्रसाद ने चगुआनास में पहले आर्य मंदिर की नीव भी रखी, जिसे मॉन्ट्रोस मंदिर और 'वैदिक चर्च' भी कहा जाता था। इस मंदिर को प्राथमिक विद्यालय के रूप में भी इस्तेमाल किया गया। 11 नवम्बर 1943 में यह मंदिर आर्य समाज एसोसिएशन के मुख्यालय के रूप में उपयोग में लाया गया।

1943 में आर्य समाज एसोसिएशन को औपनिवेशिक ब्रिटिश अधिकारियों से मान्यता मिल गई । जनवरी 1937 में ही संगठन का नाम ''आर्य प्रतिनिधि सभा, त्रिनिदाद'' करने का निर्णय लिया गया था, जो 1943 में सरकारी मान्यता के बाद आधिकारिक नाम बन गया। उस वर्ष इसकी दस शाखाएँ थी। प्रतिनिधि सभा त्रिनिदाद में नौ प्राथमिक विद्यालय चलाती थी। 1968 में सोलोमन मूसा -महाराज द्वारा 'वैदिक मिशन' की स्थापना की गई, स्कूल, कॉलेज बनाए गए, गुरुकुल खोले गए और भारतीय संगीत, संस्कृत, धर्म, दर्शन, हिंदी को जीवित रखा। इसी कारण त्रिनिदाद आज एक भारतीय सांस्कृतिक केंद्र भी है। आज वहां आर्य समाज अपने पूरे वेग से कार्य कर रहा है। वहां के आर्य समाजों और आर्य शिक्षण संस्थानों पर लहराती ओ३म ध्वज पताका मन में आर्य समाज के प्रति अथाह गर्व की भावना भर देती है कि आर्य समाज के उपकार से केवल भारतीय उपमहाद्वीप ही ऋणी नहीं हैं, बल्कि भारत से बाहर बसे हिंदुओं पर भी आर्य समाज का कितना बड़ा उपकार है। सच कहूँ तो त्रिनिदाद यात्रा के दौरान जो देखा, मन गर्व से भर उठा।

- *विनय आर्य, महामन्त्री*

साप्ताहिक स्वाध्याय

# बम्बई में आर्य समाज की स्थापना

*गतांक से आगे-*

उन्हीं लोगों ने महर्षि जी से समाज बनाने की प्रार्थना की और संगठन तैयार किया। ये बातें ध्यान में रखें तो संगठन की कई विशेषताएं समझ में आ जाती हैं। साप्ताहिक सत्संग, गृहस्थी प्रचारक आदि संस्थाएं, जो नई प्रतीत होती हैं, नई नहीं हैं। इन पर पहले का प्रभाव स्पष्ट है। कई लोगों का विचार होगा कि नियमों में पहले समाजों की प्रचलित प्रथाओं के प्रभाव को मान लेने से समाज का या इसके संस्थापक महापुरुष का महत्त्व कम हो जायगा। यह भ्रममात्र है। संस्थाएं और संगठन समय की सन्तानें हैं, वे तात्कालिक प्रभावों से बिल्कुल स्वतन्त्र नहीं रह सकते। उनका गौरव इसमें नहीं कि वे बिना जड़ के वृक्ष, बिना नींव के भवन या बिना ऋतु के फल हैं, बल्कि गौरव इसमें है कि वे समय की आवश्यकता को पूरा करते हैं, जाति की वास्तविक बीमारी का ठीक इलाज करते हैं, समय का ठीक आलाप सुनाते हैं। यद्यपि आर्यसमाज के व्यावहारिक संगठन पर ब्राह्मो समाज का प्रभाव था, तो भी हम अगले पृष्ठों में देखेंगे कि आर्यसमाज ब्राह्मो समाज की अपेक्षा अधिक समयानुकूल, जाति की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला और उपयोगी था। इस कारण जाति ने उसे अधिक व्यग्रता से देखा, अधिक उत्सुकता और उत्साह से ग्रहण किया। काठियावाड़ और पूना में, इन लगभग 5 महीनों में खूब प्रचार हुआ। बम्बई तो स्वामी जी के प्रचार से हिल गया। वल्लभ-सम्प्रदाय के गुरु शंकाओं से घबराकर बम्बई छोड़ने तक को बाध्य हो गए। मूर्तिपूजा के बेतरह खण्डन से ब्राह्मण-मण्डली विचलित हो गई। प्रजा के तंग करने से मण्डली को एक बार शास्त्रार्थ का आयोजन भी करना पड़ा। पहला शास्त्रार्थ बम्बई के पुस्तकालय में हुआ। दूसरा शास्त्रार्थ महर्षि जी के काठियावाड़ से लौटकर फिर बम्बई आने पर, होकाभाई जीवन जी के मकान पर पं० रामलाल जी शास्त्री के साथ हुआ। दोनों में विवाद का विषय यह था कि मूर्तिपूजा वेदों में है या नहीं ? जहां बनारस की पंडित मण्डली के पांव उखड़ गए, वहां बम्बई के शास्त्री क्या कर सकते थे? मूर्तिपूजा वेदों से सिद्ध न हो सकी। महर्षि जी जब बम्बई से कुछ दिनों के लिए बड़ौदा गए हुए थे, तब पं० कमलनयन शास्त्री ने शास्त्रार्थ का हल्ला किया। महर्षि जी बम्बई लौट आए। काउसजी फ्रामजी हॉल में शास्त्रार्थ हुआ। बम्बई में ईसाइयों के साथ भी कुछ झपट हुई। बड़े पादरी विलसन साहब विद्वान् पुरुष थे। महर्षि जी ने उन्हें धर्म-विचार के लिए आमन्त्रित किया। कोई उत्तर न पाकर महर्षि जी स्वयं पादरी साहब के पास पहुंचे, परन्तु फिर भी उन्हें धर्म-विचार के लिए तैयार न कर सके। बड़े आदमियों को कोई-न-कोई कार्य सदा ही रहा करते हैं। महर्षि जी के साथ धर्म-विचार जैसी अप्रिय परीक्षा से, पादरी साहब को वैसे ही एक आवश्यक कार्य ने छुटकारा दिला दिया।

गुजरात में भ्रमण करते हुए महर्षि जी ने सूरत, भड़ौच आदि में धर्म प्रचार किया, आर्य पुरुषों में नए जीवन का संचार किया। भड़ौच से महर्षि जी दिसम्बर मास में अहमदाबाद गए। साबरमती के किनारे माणिकेश्वर महादेव के मन्दिर में महर्षि जी का निवासस्थान था। अहमदाबाद में भी पण्डित मण्डली से शास्त्रार्थ हुआ। बड़ा उत्तम प्रभाव रहा, और शीघ्र ही वहां आर्यसमाज की स्थापना हो गई। ट्रेनिंग कॉलेज राजकोट के प्रिन्सिपल श्री हरगोविन्ददास जी के आमन्त्रण पर महर्षि जी राजकोट गए। राजकोट से फिर अहमदाबाद ठहरते हुए आप वलसाड़ और बसई पधारे। इस प्रकार थोड़े ही समय में प्रान्त के बड़े-बड़े स्थानों पर धर्मामृत-वर्षा कर आप जनवरी में बम्बई लौट गए। आर्यसमाज की स्थापना इसी अवसर पर हुई। बम्बई से फिर अहमदाबाद होते हुए महर्षि जी बड़ौदा पधारे।

बम्बई में महर्षि जी ने संस्कार विधि और आर्याभिविनय तैयार कराकर छपवा दिये थे। ग्रन्थ- प्रकाशन का कार्य जोरों से जारी हो चुका था। सत्यार्थप्रकाश और संस्कार विधि ये दो बड़े आर्यसमाज के मूलभूत ग्रन्थ तैयार हो चुके थे, और वेदभाष्य के प्रकाशित होने की तैयारियां हो रही थीं। आर्याभिविनय, वेदान्त ध्वान्त निवारण आदि अनेक छोटी-छोटी पुस्तिकाएं बीच-बीच में आवश्यकतानुसार प्रकाशित होती रहती थीं। बड़ौदा में महर्षि जी राज्य के अतिथि थे। आपका आसन विश्वामित्री नदी के किनारे महादेव जी के मन्दिर में जमा। वहां आपके अनेक व्याख्यान हुए। व्याख्यानों में दीवान आदि ऊंचे राज्याधिकारी उपस्थित होते थे।

पण्डित-मण्डली भी व्याख्यानों में आती थी। श्रोता सभी जातियों के होते थे। जब महर्षि जी वेद मन्त्रों का सस्वर उच्चारण करते थे, तब पण्डित लोग कानों में उंगली देकर भागने को तैयार हो जाते थे। कहते हैं कि बड़ौदा में पण्डितों के साथ एक शास्त्रार्थ का प्रसंग चलने पर, नमूना दिखाने के लिए महर्षि जी ने कुछ समय तक कठिन संस्कृत भी बोली थी, जिसे पण्डित लोग न समझ सके। सामान्यतया महर्षि जी का संस्कृत बोलने का ढंग बहुत ही सरल था। वह बड़ी सरल भाषा का प्रयोग किया करते थे। जिन्हें संस्कृत में कुछ भी प्रवेश था, वे उनके आशय को समझ जाते थे। पण्डितों के आग्रह पर यहां महर्षि जी ने कुछ समय तक कठिन संस्कृत का भी भाषण किया, जिससे आक्षेपकर्ताओं के मुंह बन्द हो गए। राजदीवान माधवराव की प्रार्थना पर महर्षि जी ने राजधर्म पर भी एक व्याख्यान दिया जिसमें अंग्रेजी न जानने वाले पण्डित के मुख से राजनीति के गम्भीर सिद्धान्तों की व्याख्या सुनकर ऊंचे अधिकारी दंग रह गए। बड़ौदा से महर्षि जी को पं० कमलनयन से शास्त्रार्थ करने के लिए फिर बम्बई जाना पड़ा।

1875 ई० के जुलाई मास के आरम्भ में प्रसिद्ध सुधारक श्रीयुत महादेव गोविन्द रानडे के निमन्त्रण पर महर्षि जी पूना गए। पूना महाराष्ट्र का केन्द्र है, और सनातन धर्म का गढ़ है। पूना के ब्राह्मण राज्यों की स्थापना कर चुके हैं और राजाओं का शासन कर चुके हैं, उनसे भिड़ना साहस का कार्य था। पूना में महर्षि जी के 15 बड़े प्रभावशाली व्याख्यान हुए। ये व्याख्यान संग्रह-रूप में छप भी चुके हैं। पूना गढ़ में इन व्याख्यानों के प्रहारों ने हलचल मचा दी। रानडे महाशय के उद्योग से शहर में महर्षि जी की सवारी निकली। एक पालकी में रखे हुए वेद आगे-आगे थे और महर्षि जी को लिये हाथी पीछे-पीछे था। सवारी बड़े धूमधाम से निकली। इसके जवाब में विरोधियों ने, जिनमें कई महाराष्ट्र के रत्न भी शामिल थे, गर्दभानन्द आचार्य की सवारी निकाली। एक आदमी का मुंह काला करके गधे पर बिठा दिया, ताली पीटते और कीच फेंकते हुए लोग साथ जाने लगे। बड़ा हुल्लड़ मचता रहा। महर्षि जी और उनके साथियों पर कीच फेंका गया। रानडे महाशय पर भी बहुत-सा कीच पड़ा। विरोधियों ने समझा कि वे इस प्रकार से सत्यवादी के मुंह को सी सकेंगे, परन्तु उन्हें पता नहीं था कि वह मोम नहीं था, जो हाथ से मुड़ जाता। इस व्यवहार से महर्षि जी का तो क्या अपमान होना था, उल्टा आज तक भी उन्हीं महानुभावों के शुभ कीर्तिचन्द्र पर कालिमा का एक धब्बा लगा हुआ है, जो और सब प्रकार से आदर के योग्य हैं। **-क्रमशः**

**पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन**
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

**Continue From Last Issue**

# Establishing Arya Samaj in Mumbai

In the beginning of the July, 1875 Swamiji went to Pune on the invitation sent by famous reformer Shri 'Mahadev Govind Ranade'. Poona is central place of Maharashtra and also great centre of Sanatan Dharm. Brahamans of Pune have established some states and also governed those states. It was a great job to have debate with them. Swamiji delivered 15 lectures in Pune. All those have been published collectively as a book. The process of condemning disturbed the opponents a lot. Procession of Swamiji was organised by Ranade. Vedas were placed in a Palki in the front Van. After that there was great scene of Swamiji sitting on the back of an elephant. The procession went on with full grace. The opponents also arranged procession of 'Acharya Gardabhanand' many great personalities of Pune were among the opponents who arranged the procession. They blackened the face of a man and made him sit on a donkey. People moved on clapping and throwing mud towards the procession of Swamiji. A lot of mud was thrown towards Mr. Ranadle also. The opponents thought that they would be able to force Swamiji and his devotees to shut their mouths. But they did not know that it was not an easy game. Their misdeeds could not stop Swamiji from performing his sacred work of reform. Rather the opponents who are fit for respect by all, had to face criticism and insult by gentle public. In a way, they have blackened their faces for ever.

To be Continue............

**With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login www.vedicprakshan.com or contact - 9540040339**

## निर्वाचन समाचार

**आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक, हरि नगर, नई दिल्ली-64**

प्रधान : श्री महेन्द्र सिंह
मन्त्री : श्री नीतिश आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री योगेश मल्होत्रा

**स्त्री आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक, हरि नगर, नई दिल्ली-64**

प्रधान : श्रीमती कंचन चोपड़ा
मन्त्री : श्रीमती कृष्णा आर्या
कोषाध्यक्ष : श्रीमती सावित्री देवी

**आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली-34**

प्रधान : श्री अरुण आर्य
मन्त्री : श्री नन्द किशोर गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री राजीव गुप्ता

**आर्यसमाज जहांगीर पुरी, दिल्ली-33**

प्रधान : श्री अरविन्द आर्य
मन्त्री : श्री रामभरोसे
कोषाध्यक्ष : श्री चन्द्र विजय

प्रथम पृष्ठ का शेष

## स्वतन्त्रता दिवस की .....

दिल्ली, वेद प्रचार मंडल, आर्य वीर दल आदि संगठनों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेश गुप्ता (ई.वी.कंपनी), डॉ. योगेश कुमार (डायरेक्टर, श्रीबालाजी एक्शन इंस्टिट्यूट), डॉ. एन.सी. कृष्णामणि (सीनियर डायरेक्टर हृदय रोग फोर्टिस हॉस्पिटल), श्री सतीश चड्डा (महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा), श्री सुरेन्द्र आर्य इत्यादि महानुभावों ने अग्रणी भूमिका निभाई।

इस तिरंगा यात्रा में भी बांग्लादेश में हो रहे हिंदुओं के उत्पीड़न के विरुद्ध भी आर्यो में काफी रोष दिखाई दिया। राष्ट्रीय एकता- अखंडता के लिए प्रतिबद्ध आर्य समाज की इस "विशाल तिरंगा-यात्रा" में हिंदुओं को जागृत करने की प्रेरणा प्रदान की गई। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रति समाज को जागृति का संदेश दिया गया। सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा-आजादी के लिए महर्षि दयानंद से प्रेरणा लेकर लाखों क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया। बांग्लादेश में भी आजादी के लिए हजारों वीर शहीद हुए, कुछ देशद्रोही शक्तियां आज भी हिंदुओं पर घोर अत्याचार, घर-बार लूटकर अत्याचार कर रही हैं। उन्होंने भारत सरकार से तुरंत हस्तक्षेप करके उनकी सुरक्षा की मांग की। तिरंगा यात्रा में सभा प्रधान धर्मपाल आर्य, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के महासचिव सतीश चड्डा, वेद प्रचार मंडल के प्रधान कर्नल रमेश चंद्र मदान, मंत्री राकेश आर्य, मुकेश आर्य सहित गणमान्य आर्यजनों ने नेतृत्व प्रदान किया।

आर्यसमाज सुदर्शन पार्क से इस विशाल तिरंगा यात्रा का सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने ओम् ध्वज फहराकर शुभारंभ किया। तिरंगा यात्रा में खुली जीप में विराजमान आर्य नेता महर्षि दयानंद, आर्य समाज, भारत माता की जय जयकार करते हुए वन्दे मातरम् के जयघोष लगाते हुए अनुशासित व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ रहे थे। यह तिरंगा यात्रा आर्य समाज मोती नगर, आर्य समाज पंजाबी बाग, आर्य समाज न्यू मोती नगर, आर्य समाज कीर्तिनगर, आर्य समाज बसई दारापुर, आर्य समाज बाली नगर, आर्य समाज श्रद्धापुरी, आर्य समाज मानसरोवर गार्डन होते हुए आर्य समाज रमेश नगर ने एक वृहद रूप में संपन्न हुई। इस अवसर पर बांग्लादेश में हताहत हिंदुओं को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। आर्यसमाजों द्वारा तिरंगा यात्रा का बीच-बीच में स्वागत किया गया। जिसमें हर आयुवर्ग के आर्यजन, सैकड़ो आर्य वीर-वीरांगनाएं, नर-नारियों ने "हिंदुओं पर अत्याचार बंद करो" भारत माता की जय, वंदे मातरम् के नारे लगाते हुए झमाझम वर्षा के बावजूद भी उत्साह पूर्वक भाग लिया।

*- राकेश आर्य, महामन्त्री, प.दि.वे.प्र.मं.*

पृष्ठ 2 का शेष

## क्या अब बांग्लादेश के हिन्दू भी .....

चुनाव जीतने के बाद, शेख़ हसीना ने अपना वादा पूरा भी किया और 1970 के दशक के जमात के बहुत से मुल्लाओं को कैद और मौत की सजाएं दिलाने में मदद की। साल 2013 आते-आते, जमात के एक सियासी दल के तौर पर काम करने पर भी पाबंदी लगा दी गई थी। बांग्लादेश के ज़्यादातर नागरिकों ने जमात पर इस प्रतिबंध का स्वागत किया था और इसके समर्थन में रैलियां भी निकाली थी। मगर, अब एक दशक बाद उस नीति को पूरी तरह से उलट दिया गया है। इस पर बांग्लादेश ही नहीं, पूरी दुनिया में लोग हैरानी जता रहे हैं। दरअसल, भारत के पड़ोसी मुल्कों में बांग्लादेश ऐसा अकेला मुल्क था जहां की अर्थव्यवस्था पटरी पर थी। इसलिए चीन वहां अपनी स्थिति मजबूत करने का प्रयास कर रहा था। शेख हसीना उसकी नजरों में इसलिए चुभ रही थी क्योंकि उनका झुकाव भारत की तरफ है। इसके लिए जमात को मोहरा बनाया गया। वरना सोचिए, स्कूल के छात्र क्यों बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर्रहमान की मूर्तियाँ तोड़ते? इसलिए इसे छात्र आंदोलन कहना या आरक्षण के विरोध में आंदोलन कहना ही गलत है। दरअसल, ये मदरसा छाप जमात-ए-इस्लामी के कट्टरपंथी और पाकिस्तान के चेले हैं जो बांग्लादेश को तालिबान बनाना चाहते हैं। इसके लिए इन्होंने आरक्षण के मुद्दे पर स्कूली छात्रों की आड़ में अपना काम किया और बांग्लादेश को उस राह पर ले आए जहाँ से बांग्लादेश ने एक देश के तौर पर अपना सफर शुरू किया था। अगर ऐसा हुआ तो बांग्लादेश के हिंदू भी इतिहास बन जाएंगे।*-संपादक*

प्रथम पृष्ठ का शेष

## 200 कुंडीय यज्ञ में हजारों आर्य ....

प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान आर्य श्री किशन गहलोत जी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। श्री विनय आर्य जी ने यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए साइंटिफिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के लाभ से व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया का कल्याण होता है, इस महत्वपूर्ण विषय पर विस्तार से चर्चा की। आपने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की विश्व को देन तथा वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रभाव और महत्व का संक्षिप्त संदेश दिया। आपने अपने उद्बोधन में भारत की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की भूमिका तथा सम्पूर्ण विश्व में आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास से उपस्थित आर्य जनसमूह को परिचित कराया।

समापन समारोह में श्री विजय सिंह भाटी, प्रधान, महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर, श्री जयसिंह गहलोत, उपप्रधान, परोपकारिणी सभा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान श्री विरेन्द्र सिंह जांगड, मन्त्री श्री करण सिंह भाटी, श्री रमेश गहलोत, श्री धीरेंद्र भाटी सांखला, श्री गजेंद्र सिंह सांखला, श्री कैलाश आर्य, श्री शिवराम आर्य, श्री ज्ञानाराम गहलोत अन्य सभी अंतरंग ने सदस्यों ने दिन रात मेहनत की। महर्षि दयानंद सरस्वती जी का 141 वर्ष पूर्व जोधपुर में आगमन हुआ था, उनकी प्रेरणा, शिक्षाओं और मान्यताओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए यह कार्यक्रम अपने आपमें अत्यंत सफल हुआ आर्य समाज पावटा माँ मंदिर के प्रमुख श्री सेवा राम जी, श्री हम सिह जी और अन्य दान दाताओं को पगड़ी और इस स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया है। *- मन्त्री*

पृष्ठ 4 का शेष

## पूर दिल्ली की आर्य समाजों ने किया ....

की घटनाएँ होना शुरू हो गई थी, जोकि अब तक भी लगातार जारी है। इस समस्त घटनाक्रम से विश्व की वो ताकतें जो भारत को समय-समय पर अल्पसंख्यकों के ऊपर अत्याचार की झूठी बातों को कहकर नसीहत देते हैं, वे सब क्यों मौन हैं? उनको यह समझ नहीं आ रहा कि आज मानवता पुकार रही है, बांग्लादेश के अंदर अल्प संख्यक हिंदुओं को टार्गेट बनाकर के जिस तरह से क़त्लेआम और लूटपाट के साथ में जघन्य अपराध किए जा रहे हैं, उस पर कोई कुछ क्यों नहीं बोल रहा? इन सारी विषमताओं को देखते हुए, आर्य समाज द्वारा 8 अगस्त 2024 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य और दिल्ली में गतिशील अन्य आर्य समाज संगठनों के अधिकारी, कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने आर्य समाज 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में विशेष बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 11 अगस्त 2024 को साप्ताहिक सत्संग के बाद प्रात: दस बजे सभी आर्य समाजों के सामने बैनर लगाकर रोष प्रदर्शन किया जाए और बांग्लादेश में हताहत मृत आत्माओं के प्रति मौन श्रद्धांजलि का भी आयोजन किया जाए।

आर्य समाज के नेतृत्व का निर्देश को स्वीकार करते हुए दिल्ली की लगभग सभी आर्यसमाजियों ने 11 अगस्त् को रविवारीय सत्संग के उपरांत अपनी-अपनी आर्य समाज के बाहर बैनर लगाकर के रोष प्रदर्शन करते हुए, बांग्लादेश में मृतकों की आत्माओं के प्रति मौन रहकर श्रद्धासुमन अर्पित किए, ज्ञात तो इससे पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने एक विडियो और पत्र जारी करके विश्व के सत्ताधीशों को जागृत करते हुए तथा भारत के माननीय प्रधानमंत्री और गृह मंत्री से अपील की थी कि जिस प्रकार हमारे देश भारत में अल्पसंख्यक सुरक्षित हैं, उसी तरह प्रत्येक देश में वहाँ के अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। सभी देशों की सरकारों का कर्तव्य है कि वे अपने यहाँ पर अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के प्रति जागरूक हों,आपने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार से भी अपील करते हुए कहा था कि बांग्लादेश में जो अल्पसंख्यक हैं वें उनके ऊपर अत्याचार बंद करें,उनकी हत्या बंद करें, उनकी जो प्रॉपर्टी हैं उसको लूटना बंद करें। किसी की जान-माल को ख़तरा न हो यह सुनिश्चित करे, वहाँ पर जो मंदिर, गिरजाघर और लोगों की प्रॉपर्टी हैं उन पर तुरंत लूटपाट बंद होनी चाहिए। इसी तरह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने भी अपने वीडियो संदेश तथा पत्र के माध्यम से भारत सरकार और बांग्लादेश की अंतरिम सरकार से भी अनुरोध करते हुए कहा था कि यह स्थिति बहुत अमानवीय है, जिस तरह के हत्याएं, लूटपाट मंदिर, गिरजाघरों और गुरुद्वारों को बांग्लादेश में टार्गेट करके अल्पसंख्यकों को मौत के घाट उतारा जा रहा है यह किसी भी तरह से उचित नहीं है, अत: शीघ्र ही इस विषय में ठोस क़दम उठाया जाना चाहिए। आर्य समाज द्वारा दिल्ली से बाहर भारत में विभिन्न स्थानों पर रोष प्रदर्शन किया गया।

*- सम्पादक*

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

### वेद प्रचार समारोह

**चतुर्वेद शतकम यज्ञ, भजन, प्रवचन**

**19 से 26 अगस्त, 2024**

यज्ञ ब्रह्मा एवं प्रवचन : डॉ. हरिदेव शास्त्री

**पूर्णाहुति एवं भाषण प्रतियोगिता**

26 अगस्त : प्रात: 8 से 1 बजे

*- संजय कुमार, मन्त्री*

आर्यसमाज बिडला लाइन्स दिल्ली

### श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं श्रावणी वेद प्रचार

**24 से 26 अगस्त, 2024**

ब्रह्मा-प्रवचन : आचार्य राजू वैज्ञानिक

भजन : डॉ. कैलाश कर्मठ

**श्रीकृष्ण जन्मोत्सव : 26 अगस्त**

सायं: 5:30 से रात्रि 9 बजे

*- अजय अग्रवाल, मन्त्री*

आर्यसमाज मयूर विहार-1, दिल्ली

### वेद शतक महायज्ञ

**22 से 25 अगस्त, 2024**

ब्रह्मा : स्वामी शिवानन्द सरसवती

भजन : श्रीमती सुदेश आर्या

**पूर्णाहुति एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलन**

25 अगस्त प्रात: 8 से 1:30 बजे

*-वीरेन्द्र कुमार महाजन, मन्त्री*

शोक समाचार

## श्री कमल गुप्ता जी को पुत्रशोक

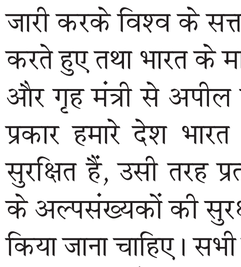

दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्यसमाज ब्रह्मपुरी के पूर्व अधिकारी श्री कमल गुप्ता जी के सुपुत्र एवं आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के मंडल संचालक श्री मधुर प्रकाश गुप्ता जी (दीपक) का दिनांक 29 जुलाई, 2024 को लगभग 40 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 अगस्त, 2024 को श्री वैश्य अग्रवाल धर्मशाला, न्यू उस्मानपुर, दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित उनके निजी परिवार एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक**

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 12 अगस्त, 2024 से रविवार 18 अगस्त, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 15-16-17/08/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14, अगस्त, 2024


माननीय कहे जाने वालों की सेवा में

## अपना व्यवहार सुधारो माननीयो

अपना व्यवहार सुधारो माननीयो,
दिखाकर के अपना बिगड़ैल रूप-
जनता को मत बिगाड़ो माननीयो।

सदन में मचाकर बेलगाम हुड़दंग,
देश का धन मत उजाड़ो माननीयो।

दिखा-दिखा कर अपनी उच्छृंखलता,
अनुशासन का उपदेश मत झाड़ो माननीयो।

अगर लड़ने-भिड़ने का ही शौक है-
तो देश की सरहदों पर पधारो माननीयो।

ओछी और कुटिल बहस को दे तिलांजलि
राष्ट्र धर्म का सकारात्मक रुख धारो माननीयो।

जाति-पांति और ऊँच-नीच का भेद मिटाकर
सब में सर्व-समभाव पसारो माननीयो।

सत्ता न मिलने की भयंकर खुजली से-
आप सीटों पर बैठ नहीं पाते हो
बार-बार उछलते हो, फिर बाहर भाग जाते हो
खुजली दबाने का इलाज जुगाड़ो माननीयो।

बड़ी उम्मीदों से आपको चुनकर भेजा था,
उन उम्मीदों पर मत दुलत्ती झाड़ो माननीयो।

पड़कर सत्ता की कुर्सी के अंधे लालच में,
मत देश-धर्म की जड़ें उखाड़ो माननीयो।

- डॉ॰ पूर्ण सिंह डबास (9818211771)

प्रतिष्ठा में,

## ड्राईवर चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित सहयोग एवं अन्य प्रकल्पों के लिए ड्राइवरों की आवश्यकता है, जिनके पास वैध लाईसेंस एवं बैज हो तथा दिल्ली के विभिन्न मार्गों की जानकारी हो। वेतन योग्यता एवं अनुभव के आधार पर। इच्छुक अपना बायोडेटा aryasabha@yahoo.com पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए 9650183339 पर सम्पर्क करें।

## अध्यापकों की आवश्यकता है

गुरुकुल आश्रम आमसेना तथा कन्या गुरुकुल आश्रम आमेसना खरियार रोड, नुआपड़ा (ओडिशा) के लिए कक्षा 6वीं से 10वीं तक गणित, मैट्रिक एवं बी.ए. छात्रों के लिए अध्यापक/अध्यापिकाओं की आवश्यकता है। भोजन, निवास के साथ उचित दक्षिणा भी दी जाएगी। सेवानिवृत्त अध्यापकों को प्रमुखता दी जाएगी। सम्पर्क करें-**व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य** 9437070541, 9437070615, 9098892558

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ॰ ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह